बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 16

धर्मशाला, सोमवार, 15 जून 2015

नशारोधी कैंपों के आयोजन में मेजबान संगठन की भूमिका अहम

ग्रामीण कैंपों का आयोजन गांवों व छोटे कस्बों में होता है, जहां इलाज की सुविधाएं मुहैया नहीं हो पाती हैं। यहां इलाज मुहैया करवाने वाली एजेंसियां समुदाय में ही एक व्यवस्था की पहचान करती हैं और उसे एक अहम भूमिका अदा करने के लिए तैयार करती हैं। यह सामुदायिक व्यवस्था, जिसमें इलाज की व्यवस्था नजदीकी सहयोग से काम करती है उसे होस्ट आर्गेनाइजेशन या मेजबान संगठन कहा जाता है। इलाज करने वाली एजेंसी ग्रामीणों के बारे में नहीं जानती, इसके परिणामस्वरूप ग्रामीणों के लिए प्रारंभ में इलाज करने वाली टीम पर भरोसा करना काफी मुश्किल होता है। ऐसे में ग्रामीण इस टीम के सामने अपनी समस्याएं छिपाते हैं। वहीं दूसरी ओर मेजबान संस्था उनके अपने ही समाज की सदस्य होती है और उसके समक्ष सामान्य अनुभवों, पहचान व मूल्यों का अदान-प्रदान करना आसान होता है। अपने लोगों के समक्ष ग्रामीणों के लिए ऐसी सारी जानकारी शेयर करने में कोई हिचक या शर्म की बात नहीं होती, जो उसकी बीमारी या परेशानी का सबब होती है। साथ ही होस्ट आर्गेनाइजेशन की सेवाएं लेने में ग्रामीण भी हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे में होस्ट आर्गेनाइजेशन की संलिप्ता एक कैंप के सफल आयोजन के लिए एक अहम कारक होती है।

मेजबान संगठन का गठन

मेजबान संगठन एक स्थानीय स्थापना या संगठन को कहा जाता है :-

1. जिसे सामाज का भरोसा व आदर प्राप्त होता है। इस संस्थान का सेवाएं देने का अच्छा ट्रैक रिकार्ड होना चाहिए और इसकी कार्यप्रणाली पारदर्शी होनी चाहिए। इसकी सेवायें समुदाय के सदस्यों को पता होनी चाहिएं।
2. जो अपने कार्यक्षेत्र के समाज में शराब की लत छुड़ाने के लिए आयोजित होने वाले चिकित्सा कैंप की जरूरतों की जानकारी रखता है।
3. जो कैंप का आयोजन करने के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए तत्पर हो और मरीजों को भी सहायता मुहैया करवाता हो।
4. जो बिना किसी आर्थिक व भौतिक लाभ के अपनी सेवाएं प्रदान करने को तैयार रहता है।

मेजबान संगठन के तौर पर काम करने वाली संस्थाओं में स्कूल, स्वयंसेवी संस्थाएं, ग्रामीण उत्थान समितियां, स्वयं सहायता समूह, धार्मिक संस्थाएं इत्यादि शामिल होते हैं।

एनजीओ के चयन के लाभ

- मेजबान संगठन के तौर पर एनजीओ यानि गैर सरकारी संस्थाएं अपनी अनौपचारिक संरचना और स्वतंत्र प्रभार के कारण त्वरित कार्रवाई करती हैं।
- उनका समुदाय के साथ अच्छा तालमेल होता है। इसके चलते वे लक्षित समूह तक पहुंचने में सक्षम होते हैं।
- क्योंकि एनजीओ के अधिकतर कार्यकर्ता ग्रासरूट स्तर पर काम करते हैं, लिहाजा स्थानीय आबादी उनकी पहचान अपने साथ कर सकती है।
- एनजीओ के पदाधिकारियों का आमतौर पर समुदाय में प्रभाव होता है। वे समाज में प्रभावी ढंग से खड़े होकर ग्रामीणों पर किसी बात को मानने के लिए सफलतापूर्वक दबाव बनाने और किसी मसले पर उनका समर्थन हासिल करने का सामर्थ रखते हैं।

साधारणत्या माना जाता है कि मेजबान संगठन अपने यहां कैंप का आयोजन करने का खर्च स्वयं वहन करते हैं। उनके द्वारा मुहैया करवाई गई सहायता कैंप के सफल आयोजन में अहम योगदान देती है।

मेजबान संगठन के दायित्व

-जीवन के हर क्षेत्र के लोगों की सहायता के लिए तैयार रहना

-एक मूल सामुदायिक टीम बनाना और उसे प्रशिक्षित करना

-नेटवर्किंग एजेंसियों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए कैंप और मदद की जरूरत के बारे में जानकारियां सांझा करना

-ठीक हो रहे नशे के मरीजों को साथ जोड़े रखने की क्षमता रखना, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक कलंक कम होता है।

-समुदाय में जागरूकता फैलाना

-संसाधन जुटाना:

- मानव संसधान: डाक्टर, स्वयंसेवी, नर्सें।
- भौतिक संसाधन: खाने-पीने का सामान, सब्जियां, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फल, दवाइयां।
- सुविधाएं: कैंप के आयोजन के लिए सामुदायिक केंद्र/ वैडिंग हाल/ स्कूल और फालोअप मीटिंग की व्यवस्था।

मेजबान संगठन की भूमिका

मेजबान संगठन की कैंप से पहले, कैंप के दौरान और कैंप के बाद एक विशिष्ट भूमिका होती है। कैंप की शुरुआत से लेकर कैंप के आयोजन और इसके बाद भी मेजबान संगठन ही मुख्य भूमिका में होता है। समाज के साथ जुड़े होने के कारण मेजबान संगठन को ही रूरल कैंप का अहम हिस्सा माना जाता है। मेजबान की इस तीन स्तरीय जिम्मेवारी को इस तरह प्रभाषित किया गया है।

कैंप से पहले:

कैंप से पहले मेजबान संगठन अपने कार्यकर्ताओं को कैंप का आयोजन करने के लिए प्रशिक्षित करता है। इलाज के लिए नशे के शिकार लोगों का चयन करता है। कैंप के लिए स्थान की व्यवस्था करता है और संसाधनों का प्रबंधन भी करता है।

कैंप के दौरान:

कैंप के दौरान स्थानीय चिकित्सक की सक्रिय भूमिका होती है, जो मेजबान संगठन मुहैया करवाता है। मेडिकल इमरजेंसी के दौरान भी मेजबान संगठन की अहम भूमिका होती है। इस दौरान मेजबान संगठन दूसरी चिकित्सा एजेंसियों के साथ नेटवर्किंग का काम करता है। कैंप के दौरान इलाजरत मरीज के परिवार का हौसला बढ़ाने और स्पोर्ट पर्सन को प्रेरित करने का काम भी मेजबान संगठन के जिम्मे होता है। इसी तरह खाने के सामान से लेकर इसके पकाने की व्यवस्था भी मेजबान संगठन के जिम्मे होती है।

कैंप के बाद:

कैंप के बाद भी मेजबान संगठन की अहम भूमिका होती है। मेजबान संगठन नशे की लत से बचाव की दवाई डिसुलफिरम के वितरण, परामर्श और मरीज के घर का दौरा करने से संबंधित फालोअप का काम भी करता है। उचित इलाज से भटकने वाले मरीजों के मामले में हस्तक्षेप करने और उन्हें उचित सहायता उपलब्ध करवाने का जिम्मा भी मेजबान संगठन के हवाले होता है। कैंप के सफल आयोजन के बाद उत्पन्न होने वाली ऐसी परिस्थितियों के लिए मेजबान संगठन के स्वयंसेवी तैयार रहते हैं। फालोअप स्टेज नशे के इलाज की अहम कड़ी होती है। इस दौरान अधिकतर मरीज दोबारा नशा करने लगते हैं या फिर जो नशा बंद कर देते हैं, तो उन्हें कई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसके लिए उन्हें उचित परामर्श व चिकित्सा सहायता उपलब्ध करवाना जरूरी होती है। स्थानीय स्तर पर चिकित्सा सुविधा मुहैया करवाने का काम स्थानीय डाक्टर का होता है। जो मेजबान संगठन का ही हिस्सा होता है। नशे से छुटकारा पाने वाले मरीजों को व्यावसायिक प्रशिक्षण, नौकरी के अवसर और चिकित्सा व मनोवैज्ञानिक की सहायता मुहैया करवाने का काम भी मेजबान संगठन ही करता है।

दूसरे बच्चे की खुशी को एचआईवी संक्रमण ने गम में बदल दिया

दिल्ली में कार्यरत चालक पति ले आया कभी ठीक न होने वाला रोग

यह कहानी है एक गर्भवती महिला की, जिसको अपने दूसरे बच्चे के आने की खुशी के दौरान ही एक ऐसी बात पता चली जिसने उसकी खुशी छीन ली। सुमन काल्पनिक नाम ने जब गर्भवती होने पर अपने जरूरी टैस्ट करवाए तो उसका एचआईवी टेस्ट भी रूटीन के टैस्टों के साथ किया गया। जब इसकी रिपोर्ट आई तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। उसे बताया गया कि वह एचआईवी वायरस की शिकार है। सुमन को इस बात का आभास तक नहीं था कि दिल्ली में चालक की नौकरी कर रहे उसके पति के जरिये एक जानलेवा वायरस उसके खून में प्रवेश कर चुका है। एचआईवी पाजिटिव पाए जाने के बाद आईसीटीसी सेंटर के काउंसलर ने उसे सलाह दी कि वह अपने पति का भी एचआईवी टैस्ट जल्दी करवा ले। जब उसने अपने पति को टैस्ट करवाया तो वह भी एचआईवी पाजिटिव पाया गया। सुमन बताती है कि तब उसे अपने से ज्यादा आने वाले बच्चे की चिंता सताने लगी। वह यह सोच कर परेशान हो गई कि कहीं उसका बच्चा भी एचआईवी का शिकार न हो जाए। सुमन ने बताया कि 11 दिसंबर 2012 को वह एचआईवी रिएक्टिव भी पाई गईं। इस पर आईसीटीसी के तत्कालीन काउंसलर ने उसे एचआईवी के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उसे पीपीटीसीटी कार्यक्रम के बारे में बताया। साथ ही उसकी मुलाकात पीपीटीसीटी कार्यक्रम की आउटरिच वर्कर श्रेष्ठा से करवाई। श्रेष्ठा ने सुमन को बताया कि गुंजन संस्था की ओर से यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है और इस संबंध में अहम जानकारी भी दी। उसने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत संस्था एचआईवी संक्रमित माता-पिता से होने वाले बच्चों को संक्रमित होने से बचाने के लिए काम करती है। फिर संस्था ने सुमन को सहारा दिया और आश्वस्त कराया कि उसके बच्चे को एचआईवी के संक्रमण से बचाया जा सकता है।

सुमन को बताया गया कि अगर इस कार्यक्रम के तहत दिए गए दिशानिर्देशों व उपायों को अपनाएंगी तो 100 में से 95 फीसदी बचाव संभव है। इस पर सुमन ने अपनी काउंसलर से कहा कि उसे बताएं कि इसके लिए क्या करना है। इस पर उसे बताया गया कि मां से बच्चे को तीन कारणों से एचआईवी संक्रमण हो सकता है। पहले तो गर्भावस्था में, फिर डिलीवरी के समय और तीसरा स्तनपान करवाते समय। सुमन को बताया गया कि गर्भावस्था में क्या-क्या सावधानियां बरतनी हैं और डिलीवरी सरकारी अस्पताल में विशेषज्ञों के माध्यम से करवानी है। सुमन व उसके पति का स्वास्थ्य अभी ठीक होने के कारण उन्होंने इस संबंध में अपने परिवार के किसी भी सदस्य को नहीं बताया था। फिर 13 मई 2013 को सुमन का प्रसव डा. राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालेज अस्पताल टांडा में हुआ। सुमन ने इसकी सूचना अपनी काउंसलर को भी दे दी थी। वह टांडा पहुंची और वहां सुमन व उसके बच्चे को आवश्यक दवाई दी। जब सुमन को कहा गया कि उसे अपने बच्चे को दूध पिलाना है, तो उसने ऐसा करने से मना कर दिया और कहा कि वह ऐसा नहीं करेगी। उसने बच्चे को गाय का दूध पिलाना शुरू कर दिया। करीब छह माह तक सुमन अपने बच्चे को गाय का दुध ही पिलाती रहीं। सुमन को कहा गया कि वह हर छह माह बाद अपना सीडीयू करवाती रहे। अभी तक उसके सीडीयू की रिपोर्ट ठीक आ रही थी। साथ ही उसे बताया गया कि उसके बच्चे की आयु 18 माह की होने पर उसका भी टैस्ट करवाया जाएगा। सुमन ने बताया कि उसे पहले एक लड़का हुआ था। उसकी आयु पांच वर्ष है और वह एचआईवी से मुक्त है। अब उसने कन्या को जन्म दिया है। जब वह 18 माह की हुई तो उसका टैस्ट करवाया गया, जो नेगेटिव पाया गया। इससे सुमन की खुशी का ठिकाना न रहा। सुमन ने बताया कि यह सब गुंजन संस्था के सहयोग से संभव हो पाया है।

उसने बताया कि उसे जब भी कोई तकलीफ होती है, तो वह संस्था की काउंसलर को फोन कर देती है और वह उसकी मदद को हर समय तैयार रहती हैं। सुमन व उसके पति के एचआईवी पाजिटिव होने का सारा गम अपने बच्चों के एचआईवी मुक्त होने की खुशी में कहीं डूब चुका है। अब वे अपने बच्चों की परवरिश में लगे हुए हैं। गुंजन संस्था उनकी हर संभव मदद के लिए हर समय तैयार रहती है।

बच्चों से सीखें भूल जाने की कला

बच्चों का आपस में जो रिश्ता होता है, वह चाहे जैसा भी हो, लेकिन उन रिश्तों में कभी नकारात्मकता नहीं होती। वे जब एक-दूसरे से मिलते हैं, कभी प्यार से खेलते हैं तो कभी आपस में झगड़ भी लेते हैं। लेकिन अगले ही कुछ घंटों में वापस उसी तरह प्यार से साथ रहते दिखाई दे जाते हैं। हम बड़ों को इस मामले में बच्चों से सीख लेनी चाहिए।

अपने आसपास, घर में या अपने जीवन में हम इन बातों को बेहद करीब से देखते हैं, कि जब भी छोटी सी बात को लेकर किसी से कोई मतभेद या मनमुटाव होता है, तो वह बात देखते ही देखते कब बड़ी बन जाती है, हमें पता भी नहीं चलता। एक छोटी सी बात कब बड़े लड़ाई- झगड़ों को जन्म दे देती है, हम समझ भी नहीं पाते, इससे पहले ही रिश्ते खत्म हो चुके होते हैं। इसके बाद भी हम अपने दंभ को इतना पोषित कर देते हैं, कि दोबारा उन रिश्तों को जोड़ने का प्रयास नहीं करते। सालें साल कोई बात मन में यूं दबी रहती है, जैसे कोई पूंजी संभाल कर रखी हो।

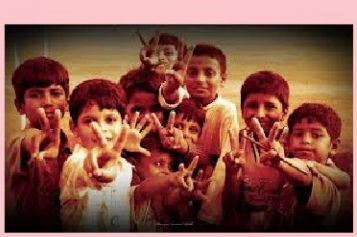

लेकिन जरा इस बारे में सोचकर देखिए कि इन सब के बावजूद जीवन में क्या बदलाव आया ... सिवाए इसके, कि आपने अपने जीवन का एक बेशकीमती रिश्ता खो दिया।वर्तमान दौर में जहां केवल खास रिश्तों को अहमियत दी जाती है, हमने एक और अपना खो दिया। लेकिन बच्चों की दुनिया पर एक नज़र डालकर देखें, क्या आपने कभी उनके साथि ?यों की संख्या कम होते देखी है.. नहीं ना। उनके नन्हें दोस्तों की संख्या हमेशा बढ़ती है, क्योंकि वे कभी उन्हें रूठकर नहीं जाने देते। झगड़ा होने के बाद भी वे कुछ समय में एक हो जाते हैं। आप जब उन्हें डांटते हैं, तो वे उसे अपने मन में नहीं रख पाते, अगले दिन तक सबकुछ भूलकर फिर से आपके साथ हंसने खेलने लगते हैं, उसी उत्साह के साथ। वे सकारात्मक होते हैं, इसीलिए उर्जा से भरपूर भी रहते हैं।

इंसानी तौर पर अपने स्तर को बेहतर बनाए रखने के लिए हमें बच्चों से सीखने की बेहद आवश्यकता है। मन की सच्चाई, निश्छल भाव और बड़ा दिल.. इन सभी की जरूरत बच्चे या बड़ों को नहीं बल्कि हर इंसान को है। ये सभी गुण एक बच्चे में होते हैं, शायद इसी लिए बच्चों के भगवान का रूप कहा जाता है।

हड्डियों के लिए मुसीबत है चाय की लत

सही है कि अति किसी भी चीज की दुखदाई ही होती है। अगर हर आधे घंटे में चाय का प्याला हाथ में लेकर सिप लेना आपकी आदत है तो सतर्क हो जाइए। विशेषज्ञ कह रहे हैं कि लम्बे समय तक रोज कई सारे कप चाय के पीने से आपकी हड्डियों को खतरा हो सकता है।

चाय की लत को लोग अलग-अलग पैमाने पर भी मापते हैं। कोई दिनभर में 4-5 कप से ज्यादा चाय पीने को गलत कहता है तो कोई दिन में 10 कप तक को जायज ठहराता है। इस संदर्भ में सबसे खास बात यह है कि चाय के इंटेक का असर चाय की क्वालिटी, पीने वाले के शरीर और जेनेटिक्स की स्थिति, चाय का समय और चाय बनाने के तरीके आदि पर निर्भर करता है।

ऐसे में किसी एक कारण को ही किसी तकलीफ के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता लेकिन यह भी सच है कि दूध, चीनी से बनी पारम्परिक चाय का लगातार, बड़े पैमाने पर किया गया सेवन शरीर को नुकसान पहुंचा सकता है। वहीं भूख मिटाने के लिए, खाली पेट या खाने के तुरंत बाद पी गई ढेर सारी मीठी चाय भी सेहत के लिए बुरी साबित हो सकती है।

हड्डियों की सेहत और चाय

हमारा खान-पान शरीर को पोषण देता है लेकिन जो असंतुलित खाद्य हम शरीर में पहुंचाते है वह कई तरह से नुकसान कर सकता है। यह नुकसान त्वरित और अस्थाई से लेकर लम्बे समय में सामने आने वाला और गंभीर तकलीफ देने वाला भी हो सकता है।

चाय से हड्डियों को पहुंचने वाला नुकसान लम्बे समय में सामने आने वाला और ध्यान न देने पर गंभीर रूप लेने वाला भी हो सकता है। खासतौर पर चाय में उपस्थित फ्लोराइड नामक खनिज हड्डियों के लिए बड़ा खतरा हो सकता है। फ्लोराइड की बहुत ज्यादा मात्रा हड्डियों में स्केलेटल फ्लोरोसिस होने की आशंका बढ़ा सकती है। आर्थराइटिस जैसी दिखने वाली यह बीमारी हड्डियों में दर्द पैदा कर देती है। इससे कमर, हाथ-पैरों तथा जोड़ों में दर्द की शिकायत हो जाती है। एक खनिज होने के नाते फ्लोराइड की सामान्य मात्रा दांतों के लिए फायदेमंद होती है और चाय के अलावा यह पीने के पानी से भी प्राप्त हो सकता है लेकिन इसकी जरूरत से ज्यादा मात्रा नुकसानदायक हो सकती है।

यह उपाय हो सकते हैं लाभदायक

चाय की मात्रा पर कंट्रोल करें। अति से बचें

कोशिश करें कि सामान्य चाय की जगह ग्रीन टी, हर्बल टी आदि पीएं

खाने के तुरंत बाद या पहले और खाली पेट चाय पीने से बचें

चाय पीने के बाद कुल्ला करें

चाय की जगह तलब लगने पर छाछ, नारियल पानी आदि पीने की आदत डालें

क्या होता है जब होता है माइग्रेन

माइग्रेन में होने वाला दर्द ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई सिर के ऊपर हथौड़े चला रहा हो। किसी को यह दर्द सिर के एक हिस्से में या फिर दोनों ही हिस्से में होता है लेकिन माइग्रेन के दर्द के दौरान शरीर के अन्य हिस्से भी हैं दर्द की चपेट में आते हैं। तेज और धमक के साथ होने वाला दर्द सामान्य सिरदर्द की श्रेणी में नहीं आता है। यह माइग्रेन का दर्द है जिसमें केवल रोगी का सिर ही नहीं शरीर के अन्य हिस्सों में भी इसके लक्षण नजर आते हैं। आइए जानते हैं क्या होता उन हिस्सों पर असर जब होता है माइग्रेन का दर्द :

मस्तिष्क : माइग्रेन के दौरान न्यूरो ट्रांसमीटर्स छोटे ब्लड वेसल्स और मस्तिष्क को कवर करने वाले मेंब्रेन्स में प्रवाहित हो जाते हैं। जिससे सूजन हो जाती है और रोगी को ऐसा महसूस होता है, जैसे उनके बालों में भी दर्द हो रहा है। दो-तिहाई रोगियों में सिर के एक हिस्से में ही दर्द महसूस होता है लेकिन कई रोगी ऐसे भी होते हैं जिनमें जबड़े और गर्दन तक दर्द चला जाता है।

आंख : इसके दर्द के साथ ही आंखों में संवेदनशीलता भी साथ आती है। ऐसा तब होता है जब आंखों और मस्तिष्क के बीच जाने वाली सिग्नल के बीच बाधा पहुंचती है।

सिर : लगभग आधे से अधिक माइग्रेन रोगियों में चक्कर जैसी स्थिति पैदा होती है। ऐसा माइग्रेन पेन चैनल और मस्तिष्क के उस हिस्से में जो नियंत्रण करने का काम करता है उनके बीच कनेक्शन होता है।

दृष्टि : 30 प्रतिशत रोगियों जिन्हें माइग्रेन होता है उन्हें चमक जैसी चीज नजर आती है। यह एक असामान्य स्थिति होती है जिसमें रोगियों को चमकती हुई रोशनी या अस्थाई रूप से काले धब्बे नजर आते हैं। ऐसा तब होता है जब माइग्रेन के कारण पैदा होने वाले इलेक्ट्रिकल और कैमिकल तरंगें पूरे मस्तिष्क में फैल जाते हैं और उस हिस्से को घेर लेती हैं जिससे चीजों को देखते हैं।

कान : तीन-चौथाई रोगियों को माइग्रेन के अटैक के दौरान आवाज के प्रति संवेदनशीलता महसूस होती है। शोध में यह बात सामने आई है कि माइग्रेन के दर्द का प्रभाव इन इंद्रियों पर अधिक पड़ता है।

नाक : माइग्रेन के 50 प्रतिशत से अधिक रोगियों में दर्द के कारण पैरासिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम सक्रिय हो जाता है। इससे नाक और आंख से पानी जाना या लाल हो जाने की शिकायत हो जाती है।

पेट : मितली और उल्टी माइग्रेन के साथ होने वाली सबसे सामान्य परेशानी है। ऐसा मस्तिष्क की संरचना और ब्रेनस्टेम के बीच संबंध हो सकता है जो कि मितली और उल्टी को नियंत्रित करता है। हॉर्मोन स्तर में होने वाले परिवर्तन भी इसमें अहम रोल अदा करते हैं।

संजीवनी एंबुलेंस सेवा से लाभान्वित हुए 450 मरीज

धर्मशाला। गुंजन आर्गेनाइजेशन आफ कम्युनिटी और आरएस परमार फाउंडेशन द्वारा चलाई जा रही संजीवनी एंबुलेंस सेवा इमरजेंसी में मरीजों के लिए वरदान साबित हो रही है। इस सेवा ने पिछले छह माह में चाढ़े चार सौ के करीब मरीजों को अस्पताल तक पहुंचाने में मदद की है। यह जानकारी देते हुए गुंजन के निदेशक संदीप परमार ने बताया कि संस्था की एंबुलेंस सेवा चौबीस घंटे उपलब्ध रहती है। कोई भी व्यक्ति जरूरी पड़ने पर मोबाइल नंबर 9736282031 पर कुलदीप सिंह को फोन करके सुविधा प्राप्त कर सकता है। उन्होंने बताया कि एंबुलेंस हर समय डा. राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालेज अस्पताल में उपलब्ध रहती है। इसके लिए अस्पताल की आरकेएस द्वारा सरकारी दरों पर तय किया गया किराया ही वसूल किया जाता है। उन्होंने बताया कि एंबुलेंस में मिनी वैंटिलेटर, पल्स एनालाइजर, निमुलाइजर, इलेक्ट्रानिक बीपी मशीन व आक्सीजन की सुविधा उपलब्ध रहती है। इसके अलावा जरूरत पड़ने पर नर्स की व्यवस्था भी की जाती है। परमार ने बताया कि इस एंबुलेंस सेवा के जरिए दोनों संस्थाएं मिल कर जन सेवा में अहम भागेदारी निभा रही हैं। जब से यह सेवा शुरू की गई है, हर समय इसे जरूरतमंदों की सेवा में उपलब्ध करवाया गया है। इस सेवा के लिए कोई भी जरूरतमंद कहीं से भी फोन करके अपने पते पर इसे मंगवा सकता है। उन्होंने बताया कि यह सेवा न केवल जिला कांगड़ा बल्कि आसपास के जिलों के मरीजों के लिए भी सेवाएं दे चुकी है। इतना ही नहीं इसके जरिये कई सीरियस मरीजों को पीजीआई चंडीगढ़ सहित अन्य बड़े अस्पतालों तक पहुंचाया गया है। इसके पायलट एवं सहायक कुलदीप सिंह के नेतृत्व में इस सेवा को दिन-रात उपलब्ध रखा जाता है। किसी भी समय जब इमरजेंसी में एंबूलेंस की जरूरत पड़ती है, तो इसे तुरंत सेवा में भेज दिया जाता है।

आई० ई० सही० मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

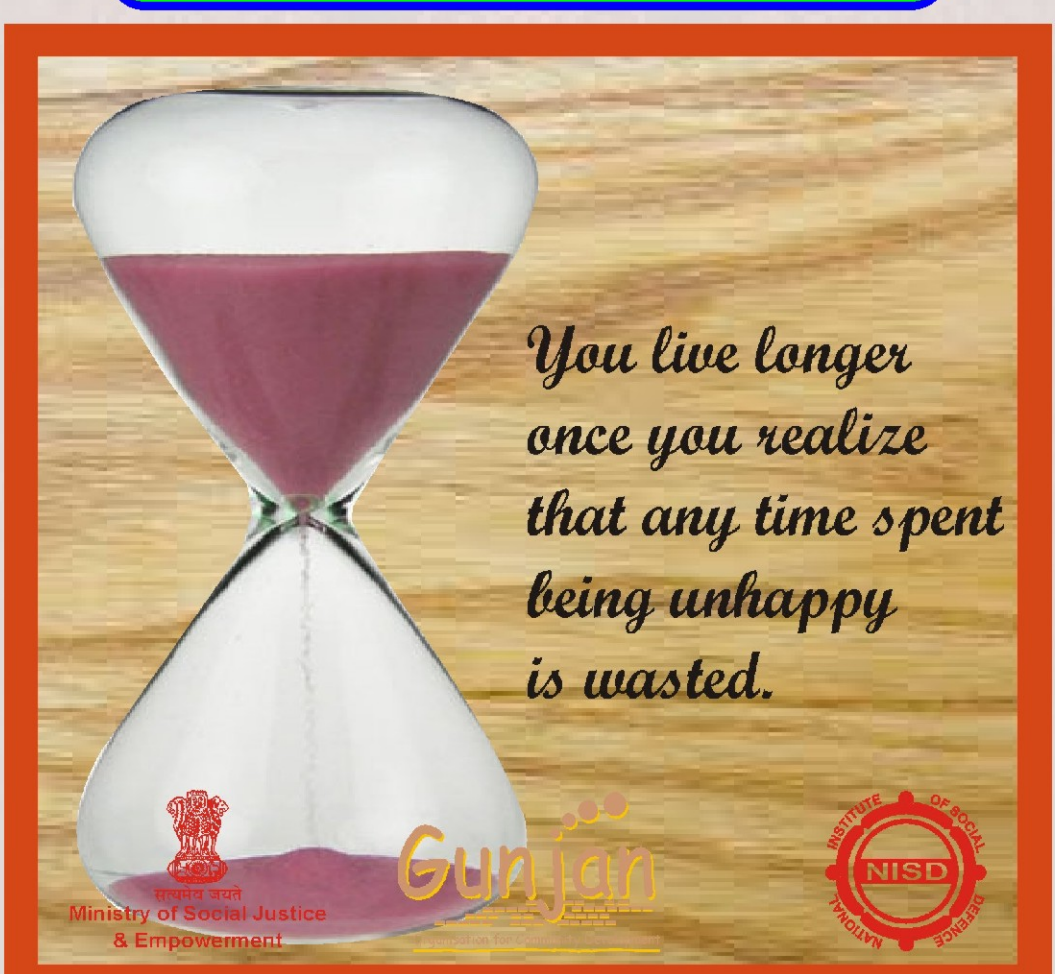

Gunjan Organisation for Community Development,Regional Resource & Training Centre North II, Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 208255, 9459082624, Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, Website: www.gunjanindia.org